सर्वपल्ली राधाकृष्णन :- बुद्धि तथा अन्तः प्रज्ञा, जीवन की आदर्शपरक सोच

- एस. राधाकृष्णन की पहली पुस्तक Ethics of the Vedanta
- उन्होंने इण्डियन फिलॉसफिकल कांग्रेस (IPC) की स्थापना की
- एस. राधाकृष्णन अद्वैतवाद के समर्थक हैं तथा वे अद्वैत वेदान्त ~~तथा~~ एवं पाश्चात्य निरपेक्ष आध्यात्मवाद (Absolute Idealism) का समन्वय किये हैं।
- राधाकृष्णन के अनुसार परमसत् अभौतिक है आध्यात्मिक है तथा सर्वश्रेष्ठ शक्ति है। यह शुद्ध चेतना (Pure consciousness) शुद्ध स्वतंत्र (Pure Freedom) तथा अनन्त सम्भावना (Infinite Possibility) से युक्त है।
- बुद्धि
  अन्तः प्रज्ञा } ज्ञानमीमांसीय

एस. राधाकृष्णन के अनुसार ज्ञानोपार्जन के तीन ढंग हैं सम्भव हैं —

(1) इन्द्रियानुभव (Sense experience)
(2) बौद्धिक अवगति (Intellectual Cognition)
(3) अन्तःदृष्टि (Intuitive Apprehension)

इन्द्रियअनुभव द्वारा बाह्य भौतिक वस्तुओं का ज्ञान होता है।

बौद्धिक ज्ञान में ~~विश्ले~~ विश्लेषण एवं संश्लेषण के द्वारा अपना कार्य करता है। इन्द्रियों से प्राप्त सामग्री का विश्लेषण करता है, तथा उन विश्लेषित तत्वों में नये नये सम्बन्ध देखते हैं, उनमें नये ढंग का संश्लेषण करता है। फलतः इसके द्वारा उपलब्ध ज्ञान परोक्ष एवं प्रतीकात्मक हो जाता है।

बौद्धिक ज्ञान को प्रतीकात्मक (Symbolic) भी कहा गया है।

राधाकृष्णन के अनुसार सत का ज्ञान बुद्धि से संभव नहीं है, बुद्धि व्यावहारिक जीवन में उपयोगी अवश्य है पर इससे सत का ज्ञान बुद्धि से नहीं बल्कि अन्तःदृष्टि से संभव है।

जीवन की आदर्शपरक दृष्टि —

राधाकृष्णन ~~आपनी~~ वैदिक संस्कृति के पोषक थे और चार पुरुषार्थ को मानते थे। आप आदर्श जीवन में धर्म, कर्म, नैतिकता आदि को महत्व प्रदान करते हैं। सफल जीवन के लिए गीता के निष्काम कर्म का पालन आवश्यक मानते हैं।